आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : बारहवां | अप्रैल-2016

5 महाराज सावन सिंह जी के मुखारविन्द से
मन्झ प्यारा गुरु को

11 सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
परमात्मा
(गुरु नानकदेव जी व गुरु अंगददेव जी की बानी)
16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

23 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से
निन्दक

27 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल-जवाब

संपादक – प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
096 67 23 33 04
099 28 92 53 04

अनुवादक –मास्टर प्रताप सिंह शाक्य
सहयोग–परमजीत सिंह व जस्सी

उप संपादक–नन्दनी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल 2016 –169 मूल्य – पाँच रुपये

सावन-सावन पई ढुडेंदी

सावन–सावन पई ढुडेंदी, सावन दिल विच वसदा,
सावन मेरा दिलबर जानी, हर साह दे विच वसदा (2)

कदी उदासी छा जांदी है, कदे पैर ना धरती लगदा,
रमज सावन दी, समझ ना आवे, पता लगे ना रग दा (2) सावन.....

हौंके हावियां विच जिंद सुक्की, ते होई फिरां सुदाई,
दिल दा महरम किते ना दिस्सया, जद झात अंदर मैं पाई (2) सावन.....

दर्श प्यासी वे मैं सावन, इक वारी दर्श दिखा दे,
तूं ते मैं इक्क हो जाईऐ, 'अजायब' दी प्यास बुझा दे (2) सावन.....

महाराज सावन सिंह जी के मुखारविन्द से

मन्झ प्यारा गुरु को

भाई मन्झ धनवान होने के साथ-साथ गाँव का मुखिया भी था। भाई मन्झ सखी सरवर के पीरखाने की पूजा किया करता था। एक दिन वह गुरु अर्जुनदेव जी के सतसंग में चला गया, उस पर सतसंग का गहरा असर पड़ा और उसने गुरु साहब से नाम की दात देने विनती की।

गुरु अर्जुनदेव जी ने भाई मन्झ से पूछा, ''अभी तुम किसको मानते हो?'' भाई मन्झ ने बड़ी दीनता से उत्तर दिया, ''महाराज! मैं सखी सरवर का सेवक हूँ।'' गुरु साहब ने कहा, ''तुम अपने घर जाओ और तुमने पूजा के लिए जो पीरखाना बनाया हुआ है उसे गिरा दो फिर मैं तुम्हें नामदान की दात दूंगा।''

भाई मन्झ बड़ी जल्दी से अपने घर की तरफ दौड़ा और उसने पीरखाने की एक-एक ईंट को तोड़ डाला। वहाँ बहुत से लोग इकट्ठे हो गए और उन लोगों ने उसे चेतावनी दी कि तुम्हें इस पीरखाने को तोड़ने की बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। अगर तुम्हें कुछ होगा तो हम तुम्हारी कोई मदद नहीं करेंगे। भाई मन्झ ने बड़े साहस से कहा, ''मैंने पीरखाने को गिरा दिया है और मैं किसी भी नतीजे को भोगने के लिए तैयार हूँ।''

जब भाई मन्झ गुरु अर्जुनदेव जी के पास वापिस लौटा तो गुरु साहब ने उसे लायक समझकर नामदान दे दिया लेकिन उसकी तकदीर में अभी कई परीक्षाएं देनी बाकी थी। थोड़े समय बाद उसका घोड़ा मर गया फिर उसके बैल मर गए; चोर उसके सामान को चुराकर ले गए। अब लोग उसका मजाक उड़ाने लगे और कहने

लगे कि आपने सखी सरवर का निरादर किया है यह सब उसी का नतीजा है। आपको फिर से अपने घर में पीरखाना बनवा लेना चाहिए लेकिन भाई मन्झ इन बातों से जरा भी परेशान नहीं हुआ। उसने कहा, ''जो कुछ हो रहा है मुझे उसकी परवाह नहीं, मेरा गुरु सब कुछ जानता है उसे पता है कि मेरा किसमें भला है? इसलिए कोई भी ताकत मेरा विश्वास नहीं डगमगा सकती।''

एक के बाद एक विपदा आती गई। थोड़े ही समय में भाई मन्झ कंगाल हो गया और बहुत लोगों का कर्जदार हो गया। उन लोगों ने भाई मन्झ से अपने पैसे मांगे और कहा कि तुरंत हमारे पैसे वापिस करे या गाँव छोड़कर चला जाए। उस समय उसके कई पुराने मित्रों ने उससे कहा, ''अगर तुम दोबारा पीरखाना बनवा लो तो यकीनन ही सब कुछ ठीक हो जाएगा।''

भाई मन्झ अपने इरादे पर मजबूत रहा उसने गाँव को छोड़ना ही बेहतर समझा। उसने अपनी पत्नी, बेटी और बचे-खुचे सामान को बाँधा और दूसरे गाँव में जाकर शरण ले ली। भाई मन्झ बहुत धनवान था इसलिए उसे व्यापार सीखने की कोई जरूरत नहीं पड़ी। अब उसके लिए कुछ पैसे कमाना बहुत जरूरी था, वह घास काटकर उसे बेचकर रोटी रोजी कमाने लगा।

इस तरह कई महीने बीत गए। गुरु साहब ने अपने एक सेवक के हाथ भाई मन्झ के लिए एक पत्र भेजा। गुरु साहब ने सेवक से कहा कि भाई मन्झ को पत्र देने से पहले बीस रूपये भेंट लेकर ही यह पत्र उसे देना।

भाई मन्झ गुरु साहब के पत्र को देखकर बहुत खुश हुआ लेकिन भेंट देने के लिए उसके पास बीस रूपये नहीं थे। उसने अपनी पत्नी से सलाह मांगी तो पत्नी ने कहा, ''मैं अपने और बेटी

के गहने सुनार के पास ले जाती हूँ और देखती हूँ कि वह इसके कितने रूपये देता है।'' सुनार ने उन गहनों के बीस रूपये ही दिए। इस तरह भाई मन्झ ने बीस रूपये भेंट किए और गुरु साहब का भेजा हुआ पत्र प्राप्त करके उसे चूमा फिर आँखों को लगाकर छाती के साथ लगाया, उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

दो साल बाद गुरु साहब ने भाई मन्झ के पास दूसरा पत्र भेजा। उस पत्र को लेने के लिए पच्चीस रूपये की भेंट देनी थी। इस बार भी भाई मन्झ के पास पैसे नहीं थे। उसे याद आया कि इस गाँव के मुखिया ने अपने बेटे की शादी मेरी बेटी से करने के लिए कहा था। भाई मन्झ ने अपनी पत्नी को उस मुखिया के पास भेजा कि वह अपनी बेटी की शादी मुखिया के बेटे से कर देगा जबकि वह उससे नीची जाति का था और शादी के बदले पच्चीस रूपये मांगने के लिए कहा। मुखिया ने खुशी-खुशी पच्चीस रूपये दे दिए और इस तरह भाई मन्झ ने गुरु साहब के भेजे हुए पत्र को प्राप्त किया।

गुरु साहब भाई मन्झ की और परीक्षा लेना चाहते थे। आखिर उन्होंने एक सेवक से कहा, ''भाई मन्झ के पास जाओ और उसे मेरे दरबार में पेश होने के लिए कहो।'' भाई मन्झ फटाफट अपने प्यारे गुरु के दरबार में हाजिर हुआ। वहाँ उसकी पत्नी और बेटी लंगर में बर्तन साफ करने लगे, लकड़ी काटने की सेवा करने लगे।

कुछ दिनों बाद गुरु साहब ने सेवकों से पूछा, ''भाई मन्झ खाना कहाँ से खाता है?'' सेवकों ने बताया, ''हम सबकी तरह वह भी लंगर में ही खाना खाता है।'' गुरु साहब ने कहा, ''फिर वह सेवा नहीं मजदूरी कर रहा है, उसे सेवा के बदले में कोई भी उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।'' जब भाई मन्झ ने अपनी पत्नी से यह बात सुनी तो उसने अपनी पत्नी से कहा, ''मैं अपनी सेवा के बदले

में गुरु से कुछ नहीं चाहता। गुरु ने मुझे अनमोल नामदान दिया है। हम किसी और तरीके से अपने भोजन का इंतजाम कर लेंगे।''

उस दिन से भाई मन्झ रात को जंगल में लकड़ी काटने के लिए जाने लगा और उस लकड़ी को बाजार में बेचकर भोजन की सामग्री खरीदने लगा। भाई मन्झ और उसका परिवार दिन के समय पहले की तरह लंगर में सेवा करने लगे।

कुछ हफ्तों के बाद भाई मन्झ एक रात जंगल में लकड़ी काटने के लिए गया तब जबरदस्त तूफान आ गया। भाई मन्झ ने बड़ी वीरता पूर्वक लकड़ी के गट्ठर को सिर पर रखकर तूफान का मुकाबला किया लेकिन हवा इतनी तेज थी कि भाई मन्झ कुएं में गिर गया। कीमती लकड़ी का गट्ठर उसके सिर पर था। जो कुछ घटा उसके बारे में गुरु साहब को पहले से ही मालूम था।

गुरु साहब ने कुछ सेवकों को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि लकड़ी का तख्ता और कुछ रस्सियां लेकर मेरे पीछे जंगल में चलें। जब वे जंगल में कुएं के पास पहुँचे तो गुरु साहब ने कहा कि इस कुएं के अंदर भाई मन्झ है। उसे आवाज लगाकर कहो कि हम लकड़ी का तख्ता रस्सी से बांधकर कुएं में डाल रहे हैं वह इस तख्ते पर चढ़े हम उसे ऊपर खींच लेंगे। सेवकों ने ऐसा ही किया।

उस समय सेवकों ने अपनी तरफ से कुछ बातें जोड़कर भाई मन्झ से कहा, ''देखो भाई साहब! आप कितनी दुर्दशा में हैं। आपके साथ यह सब गुरु के कारण ही हुआ। जो गुरु आपके साथ ऐसा कर रहा है आप उसे भुला क्यों नहीं देते!'' भाई मन्झ ने चिल्लाकर कहा, ''यह कभी नहीं हो सकता कि मैं अपने प्यारे गुरु को भूल जाऊं। आप कृतघन लोग मेरे सामने गुरु के लिए निरादर भरी बातें न बोलें। ये शर्मसार करने वाले शब्द सुनकर मुझे बहुत

दुख होता है। आप सबसे पहले लकड़ियों का गट्ठर बाहर निकालें, यह गट्ठर गुरु के लंगर के लिए है मैं नहीं चाहता कि यह गीला हो जाए।'' पहले लकड़ियों का गट्ठर बाहर निकाला गया फिर भाई मन्झ को खींचकर कुएं से बाहर निकाला गया।

जब भाई मन्झ, प्यारे सतगुरु के सामने आया तब गुरु साहब ने कहा, ''भाई साहब! आप इतनी कठिन परिक्षाओं से गुजरे, बहुत हिम्मत, विश्वास और सतगुरु की भक्ति से इनका मुकाबला किया। मुझे खुशी होगी अगर आप इसके बदले मुझसे तीनों लोकों का राज्य चाहें तो मैं पुरस्कार के रूप में वह भी दे सकता हूँ।''

भाई मन्झ ने कहा, ''मेरे प्यारे सतगुरु! यह कलयुग है। कलयुग में सेवक के अंदर इतनी ताकत नहीं कि वह ऐसी परीक्षाओं में खरा उतर सके इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ कि आगे से सेवकों से ऐसी परिक्षाएं न ली जाएं।''

इस बात से गुरु अर्जुनदेव जी बहुत खुश हुए। आप भाई मन्झ को कोई बड़ा पुरस्कार देना चाहते थे। आपने कहा मुझसे कोई भी वरदान मांग ले। मुझे वरदान देकर बहुत खुशी होगी। भाई मन्झ गुरु साहब के सामने घुटनों के बल गिर पड़ा उसकी आँखों में से आँसू की धाराएं बह रही थी और उसने कहा, ''हे सतगुरु! मैं किस वरदान की कामना करूं! मैं केवल आपको ही चाहता हूँ मेरी और किसी चीज़ में रूचि नहीं है।''

मन्झ के दिल की गहराई से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर गुरु साहब ने भाई मन्झ को गले से लगाया और कहाः

मन्झ प्यारा गुरु को, गुरु मन्झ प्यारा।
मन्झ गुरु का बोहिथा, जग लंघणहारा।।

***

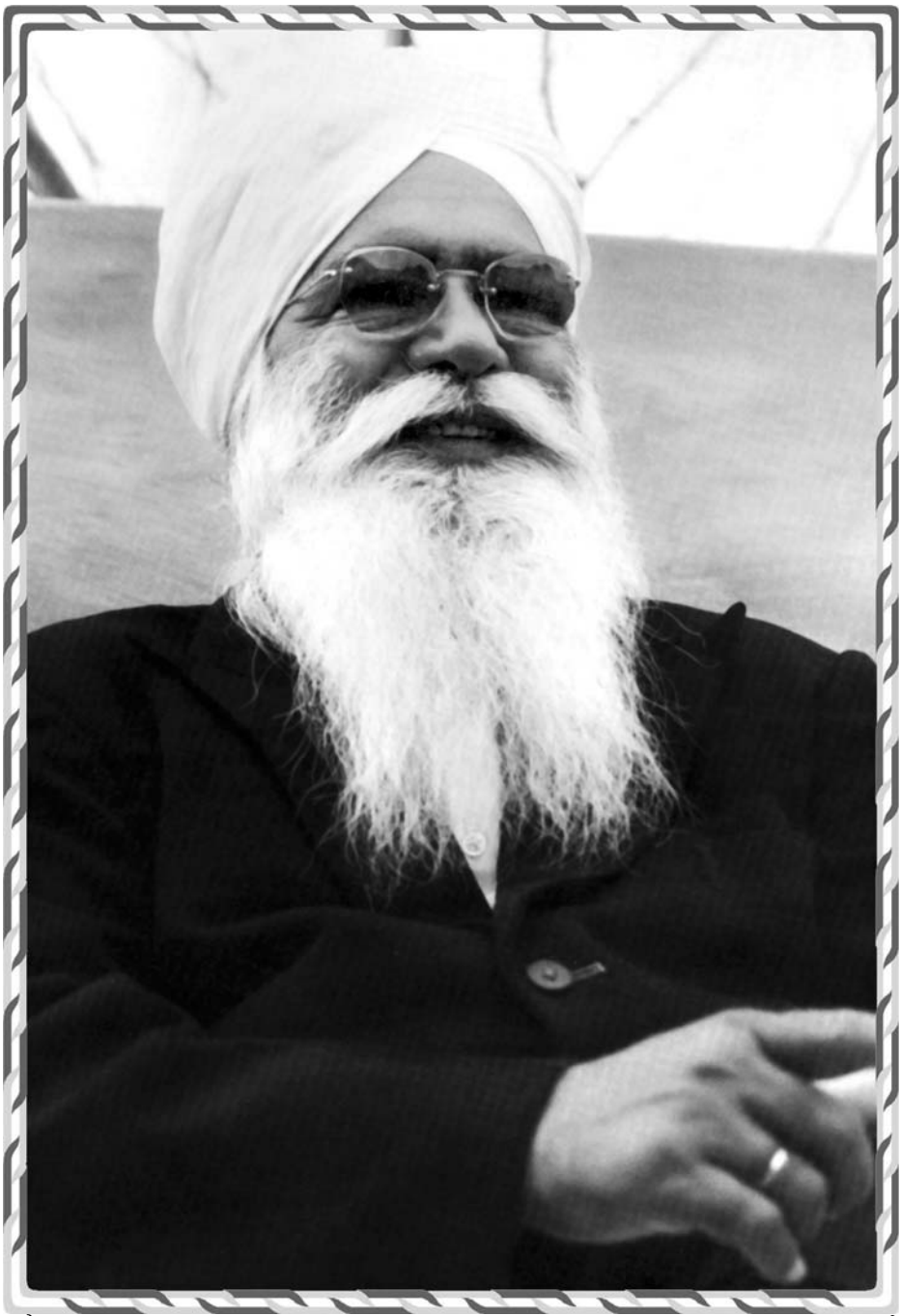

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा

गुरु नानकदेव व गुरु अंगददेव की बानी | DVD -544 | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

तुसी अर्ज सुनों कृपाल गुरु साडा मन बदियां तो मोड़ दयो।।

जब धर्म का पतन होने लगता है तब दुनिया **परमात्मा** की भक्ति को छोड़कर कर्मकांड में लग जाती है, क्रोधवाद जन्म ले लेता है। पंडित, मुल्ला, भाई, पादरी सभी एक श्रेणी के होते हैं; ये खुद भी बाहरमुखी होते हैं और जनता को भी बाहरमुखी कर देते हैं। ये बेचारे खुद भी पानी में मधानी चला रहे हैं और जनता को भी इसी तरफ लगा देते हैं।

हमें महात्माओं की लेखनियों से पता लगता है उनके ग्रंथ और पुस्तकें अंदर जाने की हिदायत करते हैं कि **परमात्मा** अंदर है और अंदर जाकर ही मिल सकता है। सबसे पहले किसी ऐसे महात्मा से मिलें जो अंदर जाता हो वही आपको अंदर लेकर जा सकता है लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि कोई भी सच सुनने के लिए तैयार नहीं होता।

जिन महात्माओं के नाम पर ये धार्मिक आगु चलने का दावा करते हैं उन महात्माओं ने बड़ी कठिन मेहनत की मन के साथ बहुत संघर्ष किया पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े मालिक के साथ विसाल किया। ये धार्मिक आगु उसके उलट ऐश-ईशरतों में फँस गए और इन्द्रियों के भोगों के गुलाम होकर रह गए। इन्हें परमात्मा या सच्चखंड में कोई दिलचस्पी ही नहीं।

प्यारेयो! हम जन्म-जन्मांतरों से **परमात्मा** से बिछुड़कर बाहर भटक रहे हैं। हमारे अध्यापक और माता-पिता भी हमें बाहरमुखी

होने में हमारी बहुत मदद करते हैं। हमारे अंदर बाहर के रीति-रिवाज का उत्साह भर देते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''हमारे ऊँचे भाग्य होते हैं तो हमारा मिलाप किसी कमाई वाले महात्मा से होता है। ऐसा कर्म बहुत थोड़ी आत्माएं ही लिखवाकर लाती हैं जिनका मिलाप गुरु के साथ लिखा होता है।''

आप सोचकर देखें! पता नहीं कोई आत्मा कब से संसार में भटक रही है, उसे कितने युग हो गए हैं, उसके कितने जन्म हो चुके हैं? उस आत्मा को अंतर्मुखी करना किसी रूहानी महात्मा के लिए आसान काम नहीं इसलिए उन्हें बार-बार सतसंग में समझाना पड़ता है; भजन-अभ्यास की प्रेक्टिस करवानी पड़ती है।

हम बचपन से ही बाहरमुखी रहने के आदी हैं हमारा रुझान बाहरमुखी ही होता है। महात्मा जन्म से ही अंतर्मुखी होने का साधन अपनाते हैं, उनकी भावना सदा ही अंतर्मुखी होती है। हम महात्मा का जीवन पढ़ते हैं कि महात्मा बचपन से ही आँखें बंद करके बैठते थे और उन्होंने अपना जीवन परमात्मा की खोज में बिताया होता है। दुनियादार और महात्मा के जीवन का हजारों लाखों कोस का फर्क होता है।

आपके आगे रोज की तरह *सारंग की वार* का शब्द रखा जा रहा है। पहले गुरु अंगददेव जी महाराज का शब्द है फिर गुरु नानकदेव जी का शब्द है। गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं कि जब शाह **परमात्मा** के पास से बंजारे जीव चलते हैं तब परमात्मा हमें कुछ श्वासों की पूँजी देता है कि आप इससे अच्छा काम करें।

परमात्मा हमें यहाँ अच्छा बनने के लिए भेजता है। **परमात्मा** कहता है कि आप 'शब्द-नाम' की कमाई करें। मैं आपको यह मौका देता हूँ अगर इस जामें में आप शब्द-नाम की कमाई करेंगे

तो मैं आपको अपने घर वापिस आने पर शाबाश दूंगा। मेरा हुक्म और मेरा प्यार सदा ही आपके साथ है। हम वहाँ से जो पूँजी लाते हैं कुछ आत्माएं उस पूँजी में बढ़ोतरी करके अपने पिता परमात्मा को खुश कर लेती हैं। जो इस विषय-विकारों की दुनिया में आकर भटक जाते हैं इन्द्रियों के गुलाम बन जाते हैं वे **परमात्मा** की दी हुई श्वासों की पूँजी को गँवाकर चले जाते हैं।

साह चले वणजारया लिखया देवे नाल।
लिखे ऊपर हुक्म होय लईऐ वस्तु समाल।।

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं, ''जब हम उस परमात्मा की तरफ से चलते हैं तब वह हमारे हाथ और मस्तक में लिख देता है कि तुझे सुख-दुख, गरीबी-बीमारी मिलेगी और तेरी मौत कहाँ पर होगी? मैं तुझे बेलगाम नहीं छोड़ रहा हूँ। तू अपनी मनबुद्धि से चाहे जितना भी बढ़ ले लेकिन मैं जब तेरी डोर खींचूंगा तब तेरा दुनियादारी का जोर किसी भी काम नहीं आएगा।''

जैसी कलम भिड़ी है मस्तक तैसी लीड़े पार।

अगर परमात्मा हमारे नेक कर्मों का सुख देता है कोई हुकूमत हासिल करने का मौका देता है, हम समझदार हैं तो परमात्मा की भक्ति करते हैं **परमात्मा** के साथ ही जुड़े रहते हैं कि हे परमात्मा! ये सब कुछ तेरी ही दया है। परमात्मा की दी हुई वस्तु को बहुत संभालकर इस्तेमाल करते हैं। सच्चाई से आँखे मोड़ लेना अक्लमंदी नहीं। कबूतर मौत को देखकर आँखें बंद कर लेता है लेकिन थोड़ी ही देर के बाद वह अपने आपको बिल्ली के मुँह में पाता है।

वस्तु लई वणजारई वखर बधा पाए।
केई लाहा ले चले ईक चले मूल गँवाए।।

कई लोग **परमात्मा** से इंसान की देह रूपी सौदा लेकर संसार में आए। कईयों ने इस देह में बैठकर नाम का व्यापार किया जो हम चौरासी लाख योनियों में नहीं कर सकते थे। कई तो इसमें बैठकर लाहा ले गए। कई इंसानी जामें के हकदार नहीं रहते वे मूल भी गंवाकर चले जाते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

पेड़ मंडा हो कटिए डाल सुखिन्दे।

जिस पेड़ की जड़ कट गई उसकी डालियां सूख जाती हैं, वह पेड़ किस तरह हरा रह सकता है? जिसने अपनी जिंदगी की जड़ ही काट ली हो वह इंसानी जामें का हकदार ही नहीं रहा तो वह किस तरह नाम की कमाई करेगा, उसे कब मौका मिलेगा? गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

अबके छुटके ठौर न ठाव।

थोड़ा किने न मंगयो किस कहिए शाबास।
नदर तिन्हां को नानका जे साबत लाए रास।।

गुरु साहब कहते हैं कि आज तक दुनिया के पदार्थ कभी किसी ने कम नहीं मांगे। जिसे एक लाख मिल जाता है वह दो लाख की ख्वाहिश करता है जब दो लाख मिल जाते हैं तो चार लाख की ख्वाहिश करता है। जो एक जिले का मालिक बन जाता है वह चाहता है कि सारे सूबे का मालिक बन जाऊं। जब सूबे का मालिक बन जाता है तो सोचता है कि सारे मुल्क का ही मालिक बन जाऊं मुल्क प्राप्त करके भी उसे सब्र नहीं होता तो चाहता है कि मैं पड़ोसी मुल्क पर भी कब्जा कर लूं।

आपको पता है कि हिटलर और शाह सिकन्दर जैसे लोगों ने कितने सपने लिए कि हम दुनिया में विजेता साबित हों। सन्त हमें

हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं सिखाते, बच्चा बढ़ने के लिए हाथ-पैर मारता है। पुरुषार्थ करना इंसान का धर्म है। आपको जो मिलना है वह आपके जन्म से पहले ही तय हो चुका है, वह आपको अवश्य मिलेगा। अगर आप ज्यादा वस्तुएं प्राप्त करने के लिए अपने कीमती उसूल कुर्बान करते हैं, ठग्गी-बईमानी करते हैं तो जब आप **परमात्मा** के पास वापिस जाते हैं तब परमात्मा किसको शाबाश दे! गुरुमुखों के सिवाय कोई ऐसा नजर ही नहीं आता जो भूखे रहकर भक्ति करता है, परमात्मा का शुक्र करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''इंसान की ख्वाहिशें ही इंसान को कंगाल बनाए रखती हैं। जिसके अंदर दुनिया भरी हुई है जो दुनिया के सामान को पाकर तृप्त नहीं हो रहा, उससे बड़ा कंगाल कौन है?''

कबीर साहब पहले सन्त हैं जो इंसानी जामें से नीचे नहीं गए। आप मर्जी मुताबिक संसार में आते रहे हैं। आप सोचकर देखें! जिसके पास इतनी शक्ति है जो अपनी मर्जी के मुताबिक जन्म ले सकता है आप किसी राजा के घर भी पैदा हो सकते थे। आप बहुत ही गरीब परिवार में आए। हिन्दुस्तान में जुलाहे लोग बहुत गरीब समझे जाते हैं क्योंकि ये लोगों का ताणा बुनकर ही अपना गुजारा करते हैं। आप इस जामें में आकर यह कहते हैं:

जिसको कछु न चाहिए सोई शहन्शाह।

बड़े-बड़े राजा महाराजा कबीर साहब के सेवक थे। वे आपको महलों में रख सकते थे, आपके रहने के लिए अच्छा मकान बनवा सकते थे लेकिन आपने ताणा बुनने में ही बादशाही समझी। आपने कुलमालिक होकर भी अपने काम को बुरा नहीं समझा। आपने हमें उपदेश दिया कि प्यारेयो! आप जहाँ भी जाकर जन्म लेते हैं

आपके कर्मों में जो भी लिखा गया है आपको वह अवश्य मिलना है वह घटता-बढ़ता नहीं।

शाह बल्ख बुखारा अच्छे राजमहल में रह रहा था, काफी फौजों का मालिक था। उसकी हुकूमत काफी इलाके में थी। जब बल्ख बुखारा ने प्रभु की नज़र को समझा तब वह अति गरीब घराने के कबीर साहब का नौकर बन गया, मुफ्त में उनका ताणा बुनने लगा। कबीर साहब ने कहा, ''तू बल्ख बुखारा का बादशाह है, मैं एक गरीब जुलाहा हूँ, तेरा मेरा निर्वाह कैसे होगा?'' बल्ख बुखारा ने कहा, ''मैं बादशाह बनकर नहीं भिखारी बनकर आपके द्वारे पर आया हूँ। आप मुझे जैसा भी रूखा-सूखा देंगे मैं खाकर गुजर कर लूंगा।'' जब बल्ख बुखारा के ऊपर परमात्मा की नज़र हुई उसने उस नज़र को पहचान लिया था।

बल्ख बुखारा के लड़के ने बहुत अच्छी दावत दी हुई थी। उस दावत में काफी अहलकारों ने इकट्ठे होना था। बल्ख बुखारा के लड़के के दिल में ख्याल आया कि इस मौके पर पिता का होना बहुत जरूरी है। वह अपने पिता को बुलाने के लिए गया। बल्ख बुखारा ने सोचा अगर मैंने इसे समझाया तो शायद इसे समझ न आए! बल्ख बुखारा ने थोड़ा सा हलवा एक शीशे पर लगा दिया, शीशे की रोशनी मद्धम पड़ गई।

बल्ख बुखारा ने कहा, ''देख बेटा! पहले यह शीशा कितना अच्छा था, हलवा लगाने से यह धुंधला हो गया है अब इसमें अपना मुँह दिखाई नहीं दे रहा। इसी तरह दुनिया के ऐशो-आराम, अच्छे खाने अपने आपको पहचानने नहीं देते प्रभु की भक्ति नहीं करने देते। मुझे जो सुख कबीर साहब का ताणा बुनने में और भक्ति करने में मिला है वह बादशाही में नहीं।''

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं **परमात्मा** हमें कितने भी पदार्थ या रूतबा दे दे हम और माँगते हैं। परमात्मा किसे शाबाश दें कोई नज़र ही नहीं आता? सिर्फ गुरमुख लोग ही परमात्मा की शाबाश के काबिल होते हैं वे दुख में रहकर भी सुख मनाते हैं। जैसे बच्चा माता के ध्यान में होता है कि बच्चे को किस चीज़ की जरूरत है। गुरुमुख भी **परमात्मा** की नजर में होते हैं। परमात्मा को पता होता है कि इसे किस चीज़ की जरूरत है? इसकी किसमें बेहतरी है; परमात्मा वही करता है जिसमें उसकी बेहतरी होती है।

जुड़ जुड़ विछड़े विछड़ जुड़े, जिव जिव मुए मुए जीवे।

अब गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''हम अनेकों बार किसी परिवार में आकर जुड़ते हैं, उस परिवार में कोई बाप बनता है कोई बेटा बनता है कोई भाई-बहन बनता है। कर्मों के अनुसार बिछड़ जाते हैं। अगर हम पशु-पक्षी है तब भी मरते हैं, इंसान हैं तब भी मरते हैं। अगर किसी ऊँचे रूतबे पर हैं चाहे राजा महाराजा है मौत फिर भी आती है। अगर गरीब हैं गलियों की खाक छानते फिरते हैं मौत तब भी आती है। हम गिनती नहीं कर सकते कि पहले हम कितनी बार जन्में और कितनी बार मरे। हम कितनी बार किस परिवार में इकट्ठे हुए और आगे फिर कितनी बार इकट्ठे होना है; हम एक-दूसरे को पहचान भी नहीं सकते।''

केतयां के बाप केतयां के बेटे केते गुरु चेले हुए।

हम आज तक कईयों के बाप बने और कितनों को हमने अपना बाप बनाया यह भी कोई गिनती नहीं कर सका। इससे पहले हम कितनी बार गुरु बने और कितने ही चेले बनाकर छोड़ गए इसकी भी कोई गिनती नहीं हो सकती। गुरु और चेले का

भाव यह है कि अगर हम पूरे गुरु के शिष्य होते तो हम भूतों की तरह यहाँ चक्कर न लगा रहे होते। पूरा गुरु नाम जपवाकर पहले दिन ही हमारी डोर ऊपर के मंडलों में बांध देता है।

पूरा सतगुरु न मिलया सुणी अधूरी सीख।
स्वांग जति का पहन कर ते घर घर मांगे भीख।।

ऐसे गुरु बने जो लोगों का खा-पीकर, मन-इन्द्रियों के गुलाम रहे। उन्होंने सेवक सिर्फ पैसों के लिए ही बनाए और सेवक भी मन-इन्द्रियों के गुलाम रहे। ऐसे गुरु मरकर कहाँ जाएंगे? वे उन्हीं सेवकों के घरों में बैल या ऊँट बनकर उनका कर्ज उतारेंगे। चेले उनको डंडे मारेंगे और उन पर चढ़ेंगे।

हमारे राजस्थान में गुरु धारण करना जरूरी है। चाहे गुरु जुएबाज हो चाहे चोर हो। खीर, हलवा और सवा रूपया मत्था टेक दें गुरु चलकर आपके घर ही आ जाएगा।

प्यारेयो! यहाँ से सत्तर अस्सी मील दूर एक गांव ताखरांवाली है। मैं उस गाँव में जाया करता था, वहाँ मेरा एक बहुत श्रद्धालु सेवक था। उस सेवक ने अपनी पत्नी को प्रेरित किया कि तू नाम ले। उसकी पत्नी ने कहा कि तेरा मेरा रास्ता अलग है तूने जिस गुरु को धारण किया है मैंने उसे गुरु धारण नहीं करना, मैं कोई और गुरु धारण करूंगी। उनके गांव में एक गुरु आया हुआ था। उसने उस गुरु के साथ बातचीत की। उस गुरु ने कहा कि पहले तो दक्षिणा सवा रूपया होती थी अब मंहगे भाव हैं तुझे सवा दस रूपये देने पड़ेंगे। उन्होंने दिन तय कर लिया।

पप्पू को भी पता है कि मैं आमतौर पर बहुत सादा खाना खाता हूँ। जब मैं उस गांव में जाता तो वे लोग मेरे खाने के लिए खुष्क रोटी बनाते। उसने कहा कि ठीक है तू जो मर्जी कर ले जब

मैं अपने गुरु को अच्छा खाना बनाकर नहीं खिलाता तो तूने भी अपने गुरु को अच्छा खाना बनाकर नहीं देना होगा।

उस गांव में एक नानूनाथ था उसने सवा दस रूपये में सौदा तय करवा दिया लेकिन हलवे और खीर का सवाल पैदा हुआ। उस औरत ने कहा, ''यह तो मेरे लिए समस्या है मेरा पति नहीं मानेगा क्योंकि कभी-कभी उसका गुरु आता है तो वह अपने गुरु को खुष्क खाना बनाकर देता है। उसका गुरु खुष्क खाना खाकर खुश रहता है और जाता हुआ हमारे बच्चों को दो रूपये भी देकर जाता है। अब अच्छी बात तो यह है कि तू पैसे न ले या खीर, हलवा माफ कर।'' उस गुरु ने कहा कि मैं गुरु नहीं बनूंगा। अब आप सोचकर देखें! ऐसे गुरुओं और ऐसे चेलों का क्या होगा?

प्योरेयो! ऐसे गुरुओं ने ही गुरुडम से नफरत पैदा की है। साँप का डसा हुआ इंसान रस्सियों से भी डरता है। यही कारण है कि हम सच्चे महात्मा से भी फायदा नहीं उठाते। हमारे दिल शक से भर जाते हैं कहीं यह भी झूठा न हो।

आगे पाछे गणित न आवे।
क्या जाति क्या हुणे हुवे ।।

आप कहते हैं कि न हम यह गिनती कर सकते हैं कि हम कितनी जातियों में आए और हमें आगे का भी पता नहीं हमने कितनी जातियों और कितने धर्मों में फिरना है।

सब करणा किरत कर लिखिए।
कर कर करता करे करे।।

आपको अपने कर्मों के हिसाब से जो कुछ मिलना है **परमात्मा** ने वह धुर से ही लिखकर भेज दिया है। वक्त आने पर घटना घट जाती है। जो कर रहा है वह परमात्मा ही कर रहा है।

मनमुख मरिए गुरुमुख तरिए।
नानक नदरि नदर करे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि यह हमारा जातिय तजुर्बा है कि मनमुख जन्मते-मरते हैं। गुरुमुखों का उद्धार हो जाता है जो गुरुमुखों की सोहबत में आ जाते हैं उनका भी उद्धार हो जाता है। गुरुमुख **परमात्मा** के हुक्म में आते हैं और परमात्मा के हुक्म में ही काम करते हैं।

मनमुख दूजा भ्रम है दूजे लोभाया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मनमुख उसे कहते हैं जो परमात्मा को छोड़कर दुनिया के पदार्थों के लोभ-मोह में लगे हुए हैं। वे भ्रम में है शायद! हमारे बुजुर्ग दुनिया के पदार्थ लेकर नहीं गए हम इन्हें साथ ले जाएंगे। ऐसे लोग अगर भूले-भटके संगत में आ भी जाएं तो वे वहाँ भी द्वैत और ईर्ष्या में फँसे रहते हैं।

कूड़ कपट कमांवदे कूड़ो आलाया।

वे झूठ बोलते हैं और झूठ का ही व्यापार करते हैं; झूठ के सहारे ही जिंदगी व्यतीत करते हैं। उनका मोह कूड़ पदार्थों के साथ ही होता है। मनमुख भ्रम में आते हैं भ्रम में ही चले जाते हैं और भ्रम में ही जिंदगी व्यतीत करते हैं। भ्रम उसे कहते हैं जिसका सिर-पैर न हो और हम उस बात को सच मान बैठे। जिस तरह दुनिया और दुनिया के पदार्थ सच्चे नहीं, दुनिया ने सदा नहीं रहना लेकिन हम भ्रम में इसे गले से लगाए बैठे हैं। जब मौत आती है तो आँख खुलती है कि ओह! मैंने अपना वक्त ऐसे ही गँवा दिया।

पुत्र कलत्र मोह हेत है, सब दुख सबाया।।
जम दरि बधे मारिए भ्रमें भरमाया।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं आपको अपनी आँखों देखी बताता हूँ कि मनमुखों को क्या-क्या सजा मिलती है? यम उन्हें मारते-पीटते, सजाएं देते हैं कि तुमने दुनिया में जाकर अत्याचार किए। तुम्हें दुनिया में शब्द की पूँजी देकर भेजा था लेकिन तुम उस रास्ते को छोड़कर द्वैत और मैं-मेरी में फँस गए।

हम देखते ही हैं कि यहाँ पुलिस अपराधी को पकड़कर पीटती है वह सो नहीं सकता। पुलिसवाले उसकी बुरी हालत करते हैं लेकिन शरीफ आदमी को पुलिस कुछ भी नहीं कहती। इसी तरह भगवान ने यमों की अपनी सरकार बनाई हुई है। धर्मराज को लेखा करने के लिए बनिया बनाया हुआ है कि हर एक का हिसाब रखना है। कोई भी आत्मा उसके लेखे के बिना न संसार में आती है न जाती है। हर एक को अच्छी तरह समझाया जाता है कि प्यारेया! ये तेरे अपने ही कर्म हैं। तब जीव पकड़ा हुआ होता है उस समय मुकर नहीं सकता।

मनमुख जन्म गँवाया नानक हर भाया।

गुरु नानकदेव जी ने इस शब्द में हमें अच्छी तरह समझा दिया कि **परमात्मा** सबको नाम की पूँजी देकर भेजता है, उसका हुक्म भी साथ ही आता है। जो हुक्म में रहते हैं परमात्मा उन्हें शाबाश देता है उन्हें अपने घर में जगह देता है। मनमुख अपना जन्म गँवा जाता है, मनमुख को क्या शाबाश दें। परमात्मा मनमुख को कितना भी दे दे वे फिर भी भूखे ही रहते हैं।

हमें भी चाहिए कि हम गुरु नानकदेव जी के कहे मुताबिक शब्द-नाम की कमाई करें। वह **परमात्मा** गुरुदेव जब हमें लेने के लिए आएं तो हमें शर्मिन्दा न होना पड़े, हमें रूकना न पड़े। हम खुशी-खुशी पहले ही तैयारी करके रखें। ***

29 दिसम्बर 1988

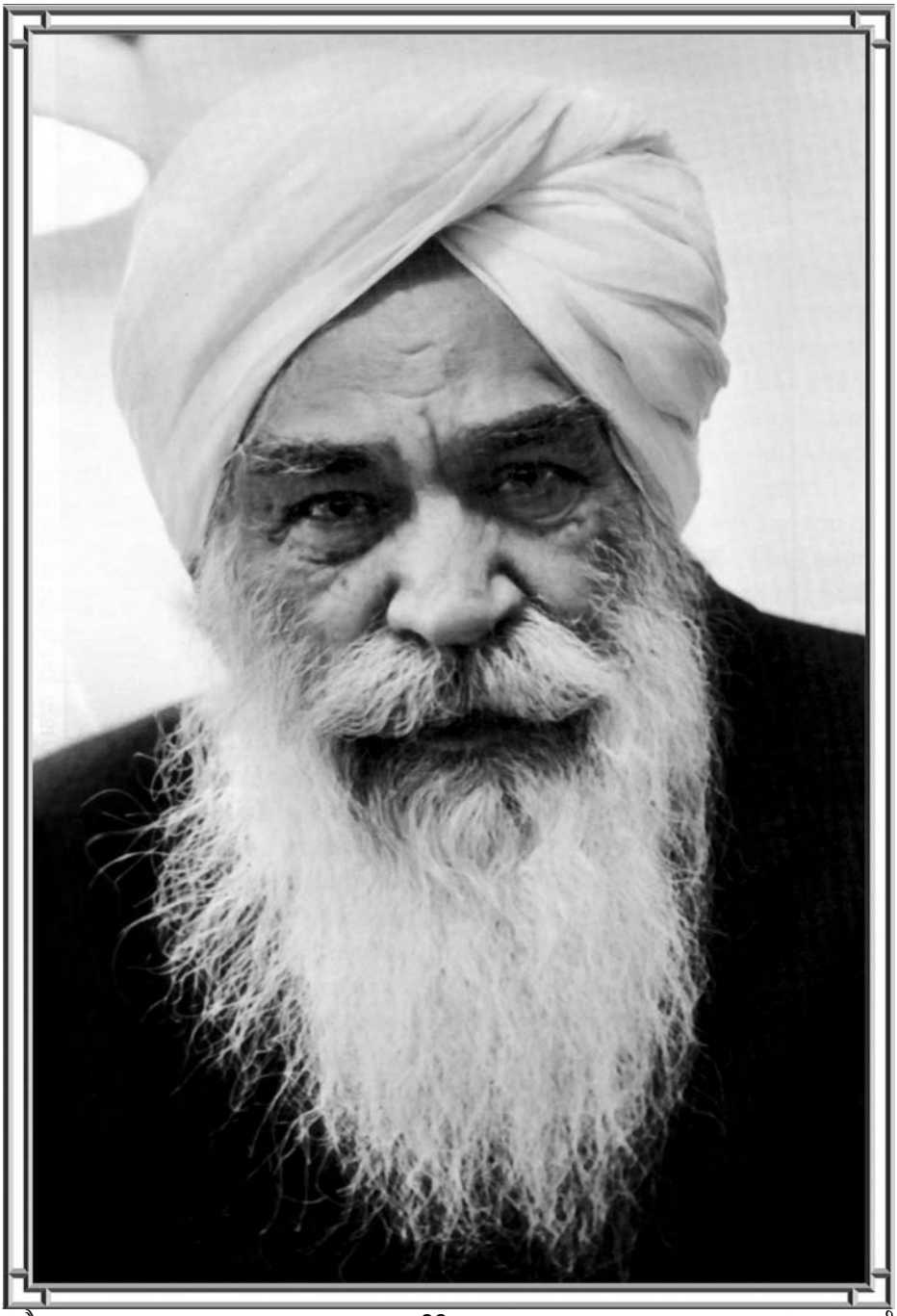

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

निन्दक

अगर बस में हो तो आप निन्दक से प्यार करें। उसके दरवाजे पर कुटिया बनाकर रहें। निन्दक प्रेम-प्यार से हमारे अवगुण बताता रहेगा, हम नेक काम कर सकेंगे। महात्मा चरनदास का वाक है:

निन्दक नेड़े राखिए आँगन कुटी छुहाऐ।

मेरे परम प्यारे महाराज कृपाल हमेशा कहा करते थे, ''मित्र लोग तो अर्थी उठाने के समय ही पहुँचते हैं लेकिन निन्दक सारी जिंदगी साथ देते हैं।'' जिस तरह गुरु जीव को नहीं भूलता उसी तरह निन्दक एक सैकिंड के लिए भी विसारने के लिए तैयार नहीं होता। निन्दक घर-घर जाकर लोगों को बताता है कि इसमें ये अवगुण है। यह बहुत सोचने वाली बात है कि हम जीवन में चाहे कितना भी अच्छा काम करें लोग उसमें मीन-मेख करने लग जाते हैं जिससे हमारा उत्साह घट जाता है।

हम कई बार सोचते हैं कि जब किसी ने हमारे काम की कद्र नहीं की तो काम करने का क्या लाभ है? इसलिए हम काम करना ही छोड़ देते हैं। हमारे काम न करने से चाहे देश को नुकसान हो लेकिन हमारी निन्दा करने वाला जीव बहुत प्रसन्न होता है। निन्दा करने वाला जीव ऐसा विचित्र है जो खुद कुछ नहीं करता बल्कि हमारी निन्दा करके हमें भी काम करने से रोक देता है।

आज देश में इस तरह के जीव-जन्तुओं की गिनती बढ़ती जा रही है। यह भी विचित्र बात है कि ऐसा जीव हमें हर जगह अगली पक्ति में खड़ा हुआ नज़र आता है।

कबीर साहब के जीवन की एक साखी है कि एक बार एक चोर बचता बचाता हुआ कबीर साहब के घर में शरण लेने आ गया कबीर साहब ने चोर को परमात्मा का नेक बंदा समझकर अपने घर में शरण दी और अपनी बेटी कमाली को उसके साथ सुला दिया। लोगों ने चोर का पीछा किया लेकिन कबीर साहब के घर से उन्हें चोर नहीं मिला।

सुबह चोर जाने लगा तो कबीर साहब ने उससे कहा कि मेरी बेटी कमाली तेरी हो गई है तू इसे भी अपने साथ ले जा। चोर ने हुक्म मान लिया और वह नेक बन गया। चोर के ऊपर कबीर साहब की सच्चाई का बहुत असर हुआ और वह चोर से शरीफ बन गया। कबीर साहब के इस निर्णय से लोग बहुत परेशान हुए, उन्होंने कबीर साहब की खूब निन्दा की। कबीर साहब ने उन लोगों से कहा, ''अगर आप लोगों को यह अच्छा नहीं लगा तो आप लोग ऐसा न करें लेकिन आप मुझे कैसे रोक सकते हैं?''

कबीर साहब भारत के लोगों की बुराईयों के बेधड़क आलोचक थे। आपने अपनी बानी में लोगों को अच्छा जीवन बिताने के लिए बहुत कुछ लिखा है। कबीर साहब की महानता यह थी कि आप अपने निन्दक की भी प्रशंसा करते थे। निन्दकों के लिए आपका शब्द हमारे साहित्य में बहुत प्रसिद्ध है और यह शब्द गुरु ग्रन्थ साहब में भी दर्ज है:

निन्दो निन्दो मोको लोक निन्दो।
निन्दा जन की खरी प्यारी निन्दा बाप निन्दा महतारी।
निन्दा होय तो बैकुंठ जाईऐ, नाम पदार्थ मने वसाईऐ।
हृदय शुद्ध जो निन्दा होय, हमरे कपड़े निन्दक धोऐ।।

निन्दक हमारे कपड़ों की मैल साफ करता है और यह सोचना कितनी अच्छी भावना है लेकिन हम निन्दा सुनकर अपने मन को काबू में नहीं रख सकते और अपना सन्तुलन खो बैठते हैं। इसका कारण यह है कि हम चाहते हैं हम जो काम कर रहे हैं हमारे काम की प्रशंसा हो हमें उस काम का अच्छा फल प्राप्त हो और लोग हमारी वाह! वाह! भी करें जोकि बहुत मुश्किल है। यही हमारी निराशा का कारण है। हम भूल जाते हैं कि गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, ''अर्जुन! तेरा कर्तव्य सात्विक कार्य करना है, तुझे अपने कर्म के फल की प्राप्ति की आशा नहीं रखनी चाहिए।''

भगवान कृष्ण का उपदेश है कि साधना ही सिद्धि होनी चाहिए। एक साधक अपनी साधना में इतना समरूप हो जाए कि वह किसी और सिद्धि की आशा ही न करे। यह कितनी महान और विलक्षण बात है कि अच्छे काम की इस साधना में निन्दक हमारा विरोधी नहीं बल्कि हमारा शुभचिन्तक है क्योंकि वह हमारी निन्दा करके हमें हर समय सचेत करता है कि हम ठीक काम नहीं कर रहे। निन्दक हमारा ध्यान हमारी कमजोरियों की तरफ लगाता है इसलिए हम अपनी कमजोरियों को दूर करके ठीक ढ़ग से उसारु काम कर सकते हैं। कबीर साहब ने कहा थाः

निन्दा करे सो हमरा मीत निन्दक माहे हमारा चीत।
निन्दक सो जो निन्दा होरे हमरा जीवन निन्दक मोरे।
निन्दा हमरी प्रेम प्यार निन्दा हमरा करे उद्धार।।

निन्दक हमारा मित्र है वह हमारे जीवन का कल्याण करता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमारे अवगुण दो ही आदमी बता सकते हैं निन्दक या सतगुरु। निन्दक हमारे मुँह पर

कह देता है अगर हमारे अंदर अवगुण हैं तो हमें वे अवगुण छोड़ छोड़ देने चाहिए और अपना सुधार कर लेना चाहिए।''

सन्त हमारे ऐब कहानी बनाकर बता देते हैं कि हमें अच्छा बनने के लिए इन चीज़ों की जरूरत है। वे बताते हैं कि कैसे अच्छा बनना है? अगर हम यह बात सोचने लग जाएं तो हमारे दैनिक जीवन में से बहुत से वैर-विरोध मिट सकते हैं और हम अपने विरोधियों की बहुत बातों को सहन करने योग्य बन सकते हैं। जिस कारण इस देश के लोगों का जीवन आरामदायक बन सकता है।

हमारे बहुत सारे झगड़े-फसादों का यही कारण है कि हम किसी भी इंसान की बात सुनने को तैयार नहीं। चाहे वह बात हमारे हित में ही क्यों न हो? हम बहुत छोटी-छोटी बातों को लेकर लोगों का खून बहाते हैं शायद इस तरह किसी देश में होता हो!

कबीर साहब का निन्दक की प्रशंसा में लिखा हुआ यह शब्द पढ़कर कई लोग हैरानी से कह देते हैं कि कबीर साहब को यह क्या सूझा जो उन्होंने निन्दा करने वालों की इतनी तारीफ कर दी। मैं हँसकर कहता हूँ कि कबीर साहब ने निन्दा करने वालों की तारीफ करने के बावजूद यह नहीं कहा कि निन्दक संसार सागर को पार कर जाएंगे। इस सम्बन्ध में कबीर साहब के शब्द की अंतरी पक्तियां बहुत ही दिलचस्प हैं:

जन कबीर को निन्दा सार, निन्दक डूबा हम उतरे पार।

हमें इस बुरी आदत से हटना चाहिए। महाराज सावन का वाक है, ''निन्दा न कड़वी है न मीठी है न चटपटी है लेकिन यह इंसानों से चिपटी हुई है।''

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *प्यारे महाराज जी! मैंने आपका वह लेख पढ़ा है जोकि आपने पढ़ने के लिए कहा था। उस लेख को पढ़ने के बाद मुझे बहुत अफसोस हुआ। मैं जब यहाँ से अपने घर वापिस जाऊँगा तो मुझ पर हमला करने वाले डाकू-काम, क्रोध मुझ पर हमला करें उस समय मैं आपके बारे में मधुरता से सोचकर काम और क्रोध को एक तरफ करने की कोशिश करूँ तो क्या ऐसा नहीं होगा कि मैंने अपने प्यार की रस्सी आपके गले में डालकर आपके ऊपर अपना बोझ लाद दिया है?*

बाबाजी: मुझे खुशी है कि आप लोगों ने सवाल-जवाब के उस लेख पर अच्छी तरह विचार किया है। मैं सदा ही सन्तबानी मैगजीन पढ़ने की सलाह देता हूँ कि मैगजीन में प्रेमियों के सवाल-जवाब छपते हैं जोकि हरेक के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। हम सतसंगियों को इन पाँच डाकूओं के बारे में मन को अच्छी तरह बता देना चाहिए कि काम बेज्जती का कारण बनता है, इंसान को जानवर बना देता है; कामी को पास खड़ा हुआ इंसान भी नजर नहीं आता और काम हमें नर्कों में ले जाता है। हमें अपने मन को काम के नुकसान बताते रहना चाहिए।

कामी आदमी 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं कर सकता, बेशक वह कितना भी समय अभ्यास में क्यों न लगा ले उसे 'शब्द' का रस ही नहीं आता। काम ऐसी अग्नि है इसके ऊपर जितनी ज्यादा लकड़ियाँ डालें यह उतना ही भांबड़ मचाती हैं। हमें अपने मन के

साथ संघर्ष करना चाहिए। सतगुरु ने हमें शब्द-धुन के साथ लेस किया होता है। हमें पाँच पवित्र नामों को नहीं भूलना चाहिए।

जब मन हमारे अंदर बुरे ख्याल पैदा करे तो उसकी तरफ तवज्जो न दें, सिमरन करे आपको अवश्य मदद मिलेगी।

जब सिपाही फ्रंट पर जाता है तो कई बार दुश्मन का जोर पड़ जाता है अगर सिपाही दुश्मन के आगे हथियार फैंक दे तो वह कैसे कामयाब होगा? अगर सिपाही कायर बनकर भागता है तो वह अपने मालिक का नमक हलाल नहीं करता इसी तरह सतसंगी को भी चाहिए कि वह एक सिपाही की तरह अपने मन के आगे मजबूत बनकर खड़ा हो जाए और उसके आगे हार न माने। मन के हमले से पहले ही हमें मन पर सिमरन का धावा बोल देना चाहिए।

जब काम हमारे ऊपर हमला करता है या हमारे ख्यालों में आ जाता है तो हम उन ख्यालों को अपने अंदर जगह दे देते हैं तो मन हमारे ऊपर हमला करता है फिर हम अपने शरीर के साथ काम की भूख मिटाते हैं। हम काम में फँसकर रुहानियत में दिवालीए हो जाते हैं तो हम तरक्की नहीं कर सकते। काम हमें ऐसे गहरे खड्डे में फैंक देता है जहाँ से हम निकल नहीं सकते। काम की बदबू दिमाग में ऐसी चढ़ती है जो सारी जिन्दगी इंसान के दिमाग से नहीं निकलती। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं :

हे कामी नर्क बिसरामी बोह जूनी भरमावनेया।

आप कहते हैं, ''हे काम! तू हमें ऊँची-नीची योनियों में ले जाता है, तू हमारे जप-तप को छीन लेता है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज हमें खबरदार करते हुए कहते हैं:

निमख स्वाद कारन कोटि दिनस दुख पावे।
घड़ी मोहित रंग माणें रलिया बोहर-बोहर पछतावे।।

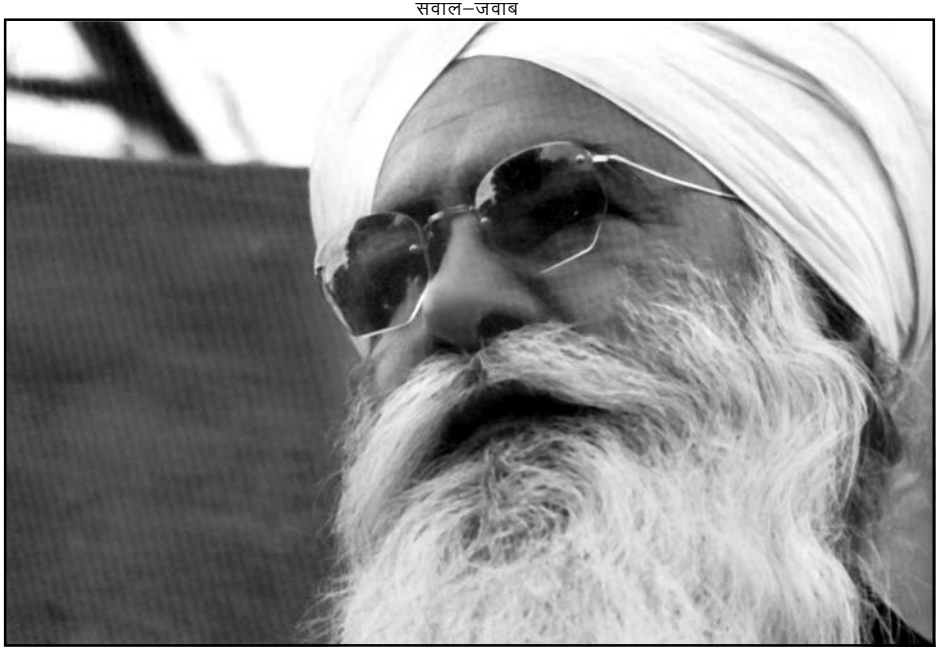

हमें मन को समझाना चाहिए कि थोड़े से सुख के लिए तुझे करोड़ दिन दुख सहने पड़ेंगे। करोड़ दिन के तैंतीस हजार साल बनते हैं अगर मन को यह घाटा बता दें तो मन तौबा कर जाएगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने अपने गुरु के आगे अपनी बाँहें फैलाकर पुकार की कि मुझे बचा ले, ये दुश्मन मुझे घेरते हैं तो मुझे मेरे गुरु ने बचा लिया।'' अगर इसी तरह हम भी सच्चे दिल से अपने गुरु के आगे फरियाद करते हैं तो चाहे रास्ता कितना भी बिखड़ा क्यों न हो गुरु हमारी मदद के लिए पहुँचता है।

हम अपने अंदर ख्यालों को जगह देकर बैठे होते हैं और ऊपर से सिमरन का ढोंग रचाते हैं। अगर हम अंदर-बाहर से सच्चे हैं तो हमारी पुकार जरूर सुनी जाएगी।

हम गुरु के ऊपर दुनियावी झगड़ों का बोझ डालते हैं। हम गुरु को पत्र लिखते हैं या इंटरव्यू में उनसे दुनियावी बातें करते

हैं। सन्तों का हमारी दुनियावी जिन्दगी से कोई लेखा-जोखा नहीं होता। गुरु तो हमें सतसंग में भी यही समझाते हैं कि आप अपनी जिन्दगी के कारज जितने शान्त मन और विवेक बुद्धि से करेंगे तो अपनी जिन्दगी शान्ति से बिता सकेंगे और ज्यादा से ज्यादा सिमरन भी कर सकेंगे। जो इन डाकुओं से बचने के लिए फरियाद करते हैं वे ऊँचे भाग्यवाले हैं। सन्त तो चाहते हैं कि हमारे बच्चे इनसे बचें।

गुरु एक धोबी की तरह है, वह तो मैले से मैले जीव की मदद करने के लिए तैयार रहता है। पति-पत्नी के लिए अपनी जिन्दगी को स्वर्ग बनाना, प्यार भरी बनाना यह उनकी खुद की ड्यूटी होती है। पत्नी पत्र में पति के सारे नुख्स लिख देती है इसी तरह पति पत्र में अपनी पत्नी के सारे नुख्स लिख देता है। आप सोचकर देखें! जब सन्त जब ऐसे पत्र पढ़ते हैं तो उनके दिल पर क्या बीतती है?

यह परेशानियाँ तो मियाँ-बीवी के बीच की होती है; उन्हें आपस में बैठकर ही फैसला करना चाहिए। सन्त किसी को यह नहीं कहते कि आप अलग-अलग हो जाएं। हम सन्तों से ऐसी बेहूदी बातें करते हैं जिनका रूहानियत से कोई मतलब नहीं होता।

जो जीव काम, क्रोध से बचने के लिए गुरु के आगे फरियाद करता है तो ऐसे जीव की मदद करके गुरु को खुशी होती है। गुरु हमें इन पाँच डाकुओं से मुकाबला करवाने के लिए संसार में आते हैं। जब कोई सच्चे दिल से इनसे बचने के लिए फरियाद करता है तो गुरु जरूर मदद करता हे। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

सवा लाख से एक लड़ाऊ तभी गोबिंद सिंह नाम कहाऊ।

हमारे धर्म ग्रन्थों में आता है कि एक इन्द्री की ताकत दस हजार हाथी की ताकत के बराबर है। इन्द्रियों को रोकना खाला जी

का वाड़ा नहीं। अकेले मन की ताकत पच्चीस हजार हाथी के बराबर लिखी हुई है। इंसान के लिए तो एक हाथी को रोकना भी मुश्किल है। गुरु इस संसार से हमें इनसे मुकाबला करवाने के लिए ही आते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह जी कहते हैं:

चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊ तभी गोबिन्द सिंह नाम कहाऊ ।

आत्मा चिड़िया है और मन बाज है। मैं इस मन को आत्मा के बस में कर दूँगा तो ही गुरु कहलाऊँगा।

जब मेरे गुरु कुलमालिक महाराज कृपाल मुझे अंदर बिठाने लगे, उन्होंने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''देख! आँखें अंदर खोलनी है और बाहर से बंद रखनी है।'' उस समय मैं एक यतीम की तरह रोया बाहर से भी आँखों से पानी निकला लेकिन बाहर की आँखों का पानी अंदर के पानी से बहुत कीमती था। मैंने कहा, ''आपने मेरी लाज रखनी है। यहाँ काल का राज्य है, काल मेरे पीछे लगा हुआ है और मेरी लाज आपके हाथ में है।''

यह आपकी दया थी कि मैं मजबूत रहा। मुझे बचपन से ही आपकी दया मिलती रही है। जिसे बचाना होता है उसके ख्यालों में बचपन से ही प्रभु का प्यार जाग पड़ता है और प्रभु उसे बुराई से बचाकर रखता है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आपने मेरी जिंदगी की नींव मजबूत बनाई। उस समय मेरी जवान अवस्था थी। आपने कहा, ''देख बेटा ! अगर तू कोई बुराई करेगा शराब पीएगा या भोगों में फंसेगा तो लोग मुझे बुरा कहेंगे कि यह उसका चेला है, यह मुझसे सुना नहीं जाएगा हो सकता है उस समय मैं आत्मघात कर लूँ! अब तू सोच समझकर अपना जीवन

बिताना। जिस तरह सेवक की लाज गुरु के हाथ में होती है उसी तरह गुरु की लाज भी सेवक के हाथ में होती है।''

बाबा बिशनदास जी ने मेरे अलावा किसी को 'नाम' नहीं दिया था। आप बहुत सख्त सन्त थे। मैं बहुत ऊँची-नीची जगह पर गया लेकिन मैंने उनका वचन पल्ले बाँधकर रखा। मैं जब घर से मालिक की खोज में निकला था उस समय मेरी माता ने कहा, ''देख बेटा! किसी का दिया हुआ कपड़ा नहीं पहनना। किसी से माँगकर नहीं खाना इससे हमारी बेइज्जती होगी। जब तेरे पास पैसे खत्म हो जाएं तू घर से आकर और पैसे ले ले जाना हम तुझे रोकेंगे नहीं। हम तेरे प्यार और लगन को समझते हैं।''

अगर आज भी मुझे कोई मजबूर करता है तो मैं उसे अपनी माता का वचन दोहराता हूँ। मेरी माता ने यह भी कहा था कि अगर कोई मजबूर करे तो उसका अफजाना किसी भी बहाने दे देना है, उसका दिल भी नहीं तोड़ना इसी तरह मैंने बाबा बिशनदास जी के बचन को भी निभाया। कबीर साहब ने कहा थाः

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

प्यारेयो! शिष्य को देखकर ही गुरु का पता लगता है। गुरु के शिष्य जितने अच्छे होते हैं उतना ही गुरु का ज्यादा मान होता है। गुरु जितने ज्यादा शिष्यों को मालिक की दरगाह में लेकर जाएगा वह अपने आपको उतना ही भाग्यशाली समझेगा।

बाबा बिशनदास ने मुझसे यह कहा था कि सदा खेती करके ही अपना निर्वाह करना है आलसी नहीं बनना। जब मैंने पंजाब छोड़ा तो राजस्थान में जमीन खरीद ली। उस समय इसे बीकानेर का इलाका कहते थे। यहाँ मैंने सदा ही अपने हाथों से किरत की,

मैं अपने आपको जितना काबिल समझता था उतनी मैंने हमेशा कोशिश की। मैंने खेती-बाड़ी करने में कभी शर्म महसूस नहीं की।

हमें अपने मन को क्रोध के नुकसान बताने चाहिए। क्रोध एक बहुत बुरी आग है जिसके अंदर यह आग लग जाती है उसके अच्छे गुणों को भस्म कर देती है। लोभ इंसान को एक माँस के लोथड़े की तरह बना देता है। लोभी इंसान को न बेटे से प्यार होता है और न ही बेटी से प्यार होता है। वह अपनी ही तृष्णा पूरी करने में लगा रहता है। लोभी आदमी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता।

यही हालत मोह की है, मोह ही हमें बार-बार संसार में खींचकर लाता है। मोह हमारा जानी दुश्मन है। ऐसी ही हालत अहंकार की है, अहंकार की उम्र बहुत लम्बी होती है। यह सब इन्द्रियों के बाद ही हार मानता है, सन्तों ने इससे बचने की दवाई 'शब्द-नाम' की कमाई बताई है। शब्द नाम की कमाई करने से ही हमारी आत्मा अहंकार का मुकाबला कर सकती है। हमारी आत्मा एक चिड़ियां की तरह कमजोर होती है लेकिन नाम की कमाई करने से आत्मा बाज जैसी ताकतवर हो जाती है।

महाराज सावन सिंह जी दुनियादारो की दुर्दशा देखकर बताया करते थे कि हम जहर भी खाते रहते हैं और हाय-हाय भी करते रहते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि जब इंसान हाथ में दीपक लेकर कुँए में गिरता है तो उसे कौन बचा सकता है? इसलिए हमें ईमानदारी के साथ गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए अगर हम ईमानदारी से भजन-सिमरन करते हैं तो गुरु अपनी ड्यूटी जरूर करता है। गुरु कभी भी अपनी ड्यूटी से पीछे नहीं रहता। ***

धन्य अजायब

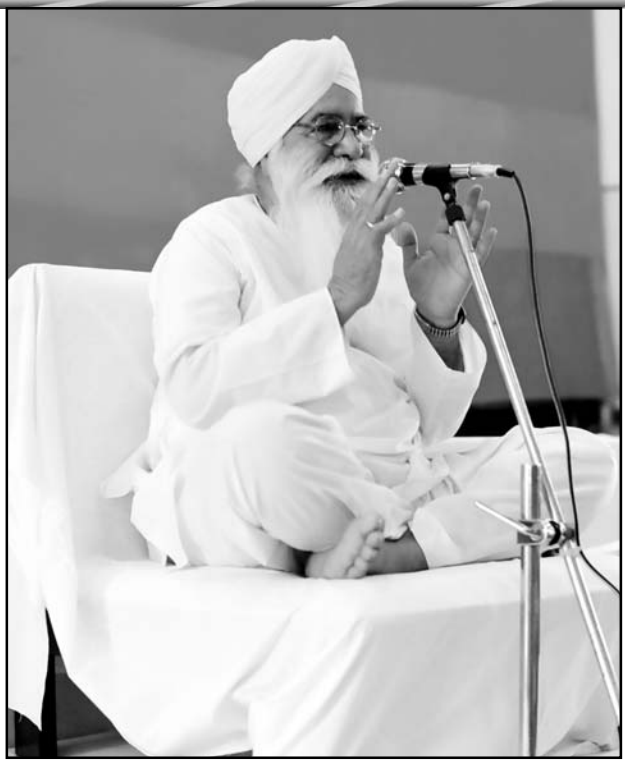

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में मई 2016 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों से प्रार्थना है कि नीचे लिखे फोन नम्बरों से सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी लें।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)

नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा – 9810212138 सोनू सिंह – 9810794597 सुरेश चोपड़ा – 9818201999